६. हम उस धरती की संतति हैं

(पूरक पठन)

–उमाकांत मालवीय

हम उस धरती के लड़के हैं, जिस धरती की बातें
क्या कहिए; अजी क्या कहिए; हाँ क्या कहिए ।
यह वह मिट्‌टी, जिस मिट्‌टी में खेले थे यहाँ ध्रुव-से बच्चे ।

यह मिट्‌टी, हुए प्रहलाद जहाँ, जो अपनी लगन के थे सच्चे ।
शेरों के जबड़े खुलवाकर, थे जहाँ भरत दतुली गिनते,
जयमल-पत्ता अपने आगे, थे नहीं किसी को कुछ गिनते !

इस कारण हम तुमसे बढ़कर, हम सबके आगे चुप रहिए ।
अजी चुप रहिए, हाँ चुप रहिए । हम उस धरती के लड़के हैं ...

बातों का जनाब, शऊर नहीं, शेखी न बघारें, हाँ चुप रहिए ।
हम उस धरती की लड़की हैं, जिस धरती की बातें क्या कहिए ।

अजी क्या कहिए, हाँ क्या कहिए ।
जिस मिट्‌टी में लक्ष्मीबाई जी, जन्मी थीं झाँसी की रानी ।
रजिया सुलताना, दुर्गावती, जो खूब लड़ी थीं मर्दानी ।
जन्मी थी बीबी चाँद जहाँ, पद्‌मिनी के जौहर की ज्वाला ।
सीता, सावित्री की धरती, जन्मी ऐसी-ऐसी बाला ।
गर डींग जनाब उड़ाएँगे, तो मजबूरन ताने सहिए, ताने सहिए, ताने सहिए ।
हम उस धरती की लड़की हैं...

यों आप खफा क्यों होती हैं, टंटा काहे का आपस में ।
हमसे तुम या तुमसे हम बढ़-चढ़कर क्या रक्खा इसमें ।
झगड़े से न कुछ हासिल होगा, रख देंगे बातें उलझा के ।
बस बात पते की इतनी है, ध्रुव या रजिया भारत माँ के ।
भारत माता के रथ के हैं हम दोनों ही दो-दो पहिये, अजी दो पहिये, हाँ दो पहिये ।
हम उस धरती की संतति हैं ....

— ० —

परिचय

जन्म : १९३१, मुंबई (महाराष्ट्र)
मृत्यु : १९८२, इलाहाबाद (उ.प्र.)
परिचय : भावों की तीव्रता और जन सरोकारों को रेखांकित करने वाले रचनाकारों में उमाकांत मालवीय का स्थान अग्रणी रहा । हिंदी साहित्य में आपको नवगीत का भगीरथ कहा जाता है । आपने कविता के अतिरिक्त खंडकाव्य, निबंध तथा बालोपयोगी पुस्तकें भी लिखीं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'मेहँदी और महावर', 'देवकी', 'रक्तपथ', 'सुबह रक्तपलाश की' (कविता संग्रह) आदि ।

पद्‌य संबंधी

कव्वाली : कव्वाली का इतिहास सात सौ वर्ष पुराना है । कव्वाली एक लोकप्रिय काव्य विधा है । यह तारीफ या शान में गाया जाने वाला गीत या कविता है ।

प्रस्तुत कव्वाली में कवि ने दो दलों की नोक-झोंक पेश करते हुए शूरवीर ऐतिहासिक स्त्री-पुरुष पात्रों का वर्णन किया है । यहाँ स्त्री-पुरुष को भारतमाता के रथ के दो पहिये बताया गया है । यहाँ गाते समय पहला पद लड़कों का समूह; दूसरा पद लड़कियों का समूह और अंतिम पद दोनों समूह मिलकर प्रस्तुत करते हैं ।

शब्द संसार

दतुली स्त्री.सं.(दे.) = दाँत
शऊर पुं.सं.(अ.) = अच्छी तरह काम करने की योग्यता या ढंग, बुद्धि
जौहर पुं.सं.(हिं.) = राजस्थान में प्राचीन समय में प्रचलित प्रथा । इसमें स्त्रियाँ विदेशी आक्रमणकारियों से अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए अग्नि में प्रवेश कर प्राणों की आहुति दे देती थीं ।
खफा वि.(अ.) = अप्रसन्न, नाराज, रुष्ट, क्रुद्ध
टंटा पुं.सं(दे.) = व्यर्थ का झंझट, खटराग, उपद्रव, उत्पात, झगड़ा, लड़ाई

मुहावरे

शेखी बघारना = स्वयं अपनी प्रशंसा करना
डींग मारना = बड़ी-बड़ी बातें करना

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**

(१) वर्गीकरण कीजिए :

पद्यांश में उल्लिखित चरित्र-ध्रुव, प्रह्लाद, भरत, लक्ष्मीबाई, रजिया सुलताना, दुर्गावती, पद्मिनी, सीता, चाँदबीबी, सावित्री, जयमल

ऐतिहासिक	पौराणिक

(२) विशेषताओं के आधार पर पहचानिए :

१. भारत माता के रथ के दो पहिये - ....
२. खूब लड़ने वाली मर्दानी - ....
३. अपनी लगन का सच्चा - ....
४. किसी को कुछ न गिनने वाले - ....

(३) सही/गलत पहचानकर गलत वाक्य को सही करके वाक्य पुन: लिखिए :

१. रानी कर्मवती ने अकबर को राखी भेजी थी ।
२. भरत शेर के दाँत गिनते थे ।
३. झगड़ने से सब कुछ प्राप्त होता है ।
४. ध्रुव आकाश में खेले थे ।

(४) कविता से प्राप्त संदेश लिखिए ।

C3QQS1